इकाई 5 सांस्कृतिक दृष्टिकोण

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 डेविड श्नाईडर का योगदान

5.2.1 नातेदारी की पारंपरिक समझ की आलोचना

5.2.2 सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली

5.2.3 अमेरिकी नातेदारी प्रणाली

5.3 सांस्कृतिक दृष्टिकोण की महत्ता

5.3.1 जेनेट कार्स्टन – संबद्धता की संस्कृति

5.3.2 मर्लिन स्ट्रैथरन

5.3.3 कैथ वेस्टन – चुना गया परिवार

5.4 नए नातेदारी अध्ययन

5.4.1 जैविक से परे

5.4.2 नारीवादी योगदान

5.4.3 प्रजनन की नई तकनीकी

5.5 श्नाईडर के बाद नातेदारी अध्ययन

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह बता सकेंगे/सकेंगी कि :

- नातेदारी अध्ययन में सांस्कृतिक दृष्टिकोण का क्या महत्त्व है
- नातेदारी की पारंपरिक समझ में क्या कमियाँ थीं
- नातेदारी अध्ययन में नारीवाद का क्या योगदान है
- समकालीन सदर्भ में नातेदारी की स्थिति क्या है

5.1 प्रस्तावना

मानवविज्ञान में नातेदारी को समझने के दो तरीके हैं। एक के मुताबिक, नातेदारी का विश्लेषण केवल मानव प्रजनन की जैविक आवश्यकताओं के पदों में ही किया जा सकता है। ऐसी मान्यता है कि नातेदारी, यौन–संबंध और प्रजनन पर आधारित है। इस दृष्टिकोण के समर्थक वंश और विवाह के माध्यम से संबंधों का पता लगाने पर जोर देते हैं। दूसरे के मुताबिक, जैविक का संदर्भ मानवजाति केन्द्रीयता के अलावा और कुछ नहीं है, जो यूरोपीय संस्कृति से व्युत्पन्न है। यह दृष्टिकोण नातेदारी को समाज की सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में समझने की बात करता है। इस प्रकार, नातेदारी मुख्य रूप से संस्कृति का विषय है। नातेदारी प्रजनन की जैविक प्रक्रिया से निर्मित भर न होकर उसकी व्याख्या से निर्मित होती है। पहला

दृष्टिकोण जैविक मॉडल या वंशावली दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है, जिसमें विश्लेषण के केंद्र में परिवार और विवाह रहे हैं। विवाह और प्रजनन के माध्यम से परिवार के बनने को समान रूप से होने वाली प्राकृतिक और सार्वभौमिक घटना माना जाता रहा। सांस्कृतिक दृष्टिकोण के समर्थकों के लिए, ऐसी धारणा हमेशा सच नहीं थी। उदाहरण के लिए, ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स (जिसका अध्ययन ब्रोनिस्लाव मैलिनोवस्की ने किया) के बीच सामाजिक संबंध, बिना जैविक संदर्भ के बनते हैं। उनमें लोग प्रजनन की प्रक्रिया से गुजरे बिना नातेदार बनते पाए गए। केवल जैविक के संदर्भ में नातेदारी को समझने के क्रम में परिवार और विवाह के बाहर

बने संबंधों का बड़ा दायरा छूट जाता है। इसलिए नातेदारी की 'असल' बुनियाद संस्कृति को माना जाना चाहिए न कि जैविक को।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण में सामाजिक संबंधों की पड़ताल प्रतीकों के दृष्टिकोण से की जाती है, जिसमें संबंध अंतर्निहित होते हैं। नातेदारी का अध्ययन संस्कृति की एथनोग्राफीय तहकीकात पर निर्भर करता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक दृष्टिकोण के अनुसार, नातेदारी एक सांस्कृतिक या सामाजिक निर्मिति है। वहीं जैविक दृष्टिकोण इसे प्राकृतिक और प्रदत्त मानता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण के प्रवर्तक डेविड श्नाईडर थे, जिन्होंने नातेदारी को साझे प्रतीकों और अर्थों पर आधारित सांस्कृतिक प्रणाली माना और तदनुसार उसकी पड़ताल की। नातेदारी को प्राकृतिक के दायरे से बाहर निकालने के लिए उन्होंने संस्कृति का प्रयोग इस आधार पर किया कि संबंध सांस्कृतिक रूप से बनते हैं।

5.2. डेविड श्नाईडर का योगदान

डेविड श्नाईडर एक प्रतीकवादी मानवविज्ञानी थे, जिन्होंने विशुद्ध रूप से जैविक पदों में नातेदारी की चली आ रही समझ को खारिज किया था। श्नाईडर के लिए नियम, मूल्य और प्रतीक मायने रखते थे और इसलिए उन्होंने नातेदारी को

सांस्कृतिक करार दिया। दरअसल जैविक को नातेदारी का आधार मानने की जो धारणा थी वह पश्चिमी मानवविज्ञानियों के मानस की उपज थी, न कि अध्ययन किए जा रहे समाज में पाई जाने वाली कोई हकीकत। अपनी क्लासिक कृति *अमेरिकन किनशिपः ए कल्चरल अकाउंट* में उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि 'हम अमेरिकी संस्कृति में जिसे प्रकृति मानते हैं है वह वास्तव में संस्कृति है'। उन्होंने संस्कृति को प्रतीकों और अर्थों की एक प्रणाली के रूप में परिभाषित किया और नातेदारी को प्रतीकों और अर्थों का एक समुच्चय माना। रक्त और विवाह आधारित संबंध जैसे कुछ ठोस तत्वों के संदर्भ में नातेदारी की परिभाषा को चुनौती देकर, श्नाईडर ने नातेदारी को वंशावली और घरेलू दायरे से बाहर निकाला। जैविक और वैवाहिक संबंधों के प्रतीकात्मक आयाम पर ध्यान देकर उन्होंने नातेदारी अध्ययन में

नई दिशा की शुरुआत की। इसे मानवविज्ञान में सांस्कृतिक मोड़ कहा जाता है। इसने नातेदारी को सांस्कृतिक रूप में परिभाषित किया।

5.2.1 नातेदारी की पारंपरिक समझ की आलोचना

डेविड श्नाईडर ने जैविक पहलू के एकतरफा महत्व के आधार पर नातेदारी की पश्चिमी समझ की उपयोगिता पर सवाल उठाया। उन्होंने दावा किया कि पश्चिमी मानवविज्ञानी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत अपनी उपयोगिता में सीमित थे। गैर–पश्चिमी समाज के परिवार और नातेदारी को समझने में वे उपयुक्त नहीं हो सकते थे। अपनी *किताब ए क्रिटिक ऑफ द स्टडी ऑफ किनशिप* में श्नाईडर नातेदारी को इस हद तक अमूर्त मानते हैं कि इस नाम की किसी चीज के अस्तित्व से ही इंकार करते हैं। खासकर विषमलैंगिक एकल परिवार के सार्वभौमिक मॉडल के अर्थ में, जिसमें विवाह जैविक नियमों की सामाजिक अभिव्यक्ति हो। उनके अनुसार अमेरिकी मानवविज्ञानियों की अपने समाज में व्याप्त आम अविश्वास आधारित यह पूर्वधारणा दोषपूर्ण थी कि रक्त, पानी से अधिक मूल्यवान होता है।

उन्होंने यह भी कहा कि यूरो–अमेरिकी लोक मॉडल नातेदारी को प्राकृतिक, यानी जैविक तथ्यों की सामाजिक निर्मिति समझते हैं (श्नाईडर, 1980)। बाद में, उन्होंने इसे विस्तार देते हुए प्रस्तावित किया कि नातेदारी के मानवविज्ञान ने इन मॉडलों के तहत नातेदारी की जैविक प्रकृति के बारे में स्वीकृत मान्यताओं को पुनरुत्पादित भर किया।

वे तीन आधारों पर सामाजिक मानवविज्ञानियों की आलोचना करते हैं : –

- वे केवल जैविक पहलू की बात करते हैं।
- उनका सरोकार केवल जैव–आनुवांशिक (बायोजेनेटिक) तत्वों की साझेदारी से हैं। वे साझेदारी की मात्रा या हद का अध्ययन नहीं कर रहे थे।
- संरचना और संस्कृति में कोई भेद नहीं करते हैं।

जैसा कि पहले कहा गया है कि नातेदारी जैव–आनुवंशिक तत्वों पर आधारित है, लेकिन नातेदारी संबंधों को समझने में सामाजिक पहलुओं पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

5.2.2 सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली

श्नाईडर ने नातेदारी के अपने अध्ययन में समाज की सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली के बीच भेद किया। उन्होंने सांस्कृतिक प्रणाली को ऐसी इकाइयों (भागों) से बनी हुई प्रणाली माना, जो खास तरह से परिभाषित किए जाते हैं और जिनके बीच, विभिन्न विचारों के आधार पर भिन्नता होती है। मानक प्रणाली नियम–कायदों से बनी होती है। समाज और समुदाय में स्वीकृति पाने के लिए लोगों से उनके पालन करने की अपेक्षा की जाती है। ये दरअसल 'कैसे व्यवहार करें' से संबंधित नियम होते हैं। उदाहरण के लिए, मध्य वर्ग के एक पिता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने परिवार को सहारा देने के लिए कमाए, हालाँकि यह जरूरी नहीं कि मध्य वर्ग के सभी पिता वास्तव में ऐसा करते हों।

मानक–केंद्रित समझ के लिहाज से संस्कृति अधिक स्थिर, प्रदत्त और बहुत कम प्रक्रियात्मक प्रतीत होती है। वहीं, सांस्कृतिक प्रणाली में, संस्कृति का ताल्लुक मंच, मंच की व्यवस्था और पात्रों से रहता है जबकि मानक प्रणाली का ताल्लुक पात्रों को निर्देशित करने और उन्हें कौन–सी भूमिकाएँ निभानी हैं, उससे रहता है। इसका मतलब यह नहीं है कि मानक और सांस्कृतिक प्रणालियाँ एक–दूसरे से जुड़ी नहीं होती हैं। सांस्कृतिक स्तर, मानक स्तर का एक हिस्सा होता है। सांस्कृतिक धारणाएँ हमें बताती हैं कि संबंध दो तरह के होते हैं दृ रक्त–संबंध और वैवाहिक संबंध। लेकिन इन संबंधों के साथ कैसे जुड़ा जाए, किस तरह से पेश आया जाए, उसे मानक प्रणाली निर्देशित करती है। नातेदारी के अध्ययन के लिए यह जरूरी है कि मानक प्रणाली के नियमों को जाना जाए, लेकिन इसे 'सांस्कृतिक प्रणाली' के साथ रख कर देखना जरूरी है जो कि वास्तव में व्यवहार में प्रचलित रहता है।

इस तरह, श्नाईडर के अनुसार नातेदारी सांस्कृतिक है। वे ठोस व्यवहार में अंतर्निहित अर्थों और प्रतीकों पर गौर करते हैं। श्नाईडर यह जानने कि कोशिश

करते हैं वे कैसे एक सुसंगत और परस्पर आबद्ध अर्थों और प्रतीकों की दुनिया बनाते हैं।

5.2.3 अमेरिकी नातेदारी

अमेरिकी संस्कृति में नातेदारी दायरे का अध्ययन करने के क्रम में श्नाईडर ने पाया कि यह दायरा दो अलग–अलग हिस्सों से बने वृहत्तर दायरे का केवल एक हिस्सा है, जो कि निम्नलिखित हैंरू

- साझा जैव–आनुवंशिक तत्व या रक्त, जो विरासत में मिला प्राकृतिक तत्व है
- आचार संहिता या नैतिक निर्देश, जो संबंधित सदस्यों के बीच एकजुटता सुनिश्चित करता है।

इन दो तत्वों के संयोग से नातेदारों की तीन प्रमुख श्रेणियाँ बनती हैं –

अ) जब दोनों तत्व एक साथ होते हैं, तो रक्त संबंध बनते हैं। इन रक्त संबंधियों को प्रकृतिक तौर पर जुड़ा हुआ माना जाता है, जो प्राकृतिक या स्वाभाविक तौर पर जुड़ी चीजों का हिस्सा होते हैं।

आ) जब केवल आचार संहिता की मौजूदगी हो और साझा जैव आनुवंशिक तत्व अनुपस्थित हो, तब विवाह द्वारा या अन्यथा, संबंधियों की श्रेणी बनती है। यह प्राकृतिक न होकर नियम–कायदों के वृहत्तर श्रेणी का हिस्सा होती है।

इ) अंत में, जब साझा जैव–आनुवंशिक तत्व की मौजूदगी अकेले होती है तब संबंधियों की श्रेणी बनती है

श्नाईडर के लिए नातेदारी का ताल्लुक साझे जैव–आनुवंशिक तत्वों से न होकर हम उसे साझा कैसे करते हैं, उससे है। यदि साझा तत्वों की कल्पना वर्ग कारकों की बजाय मात्रा के संदर्भ किया जाए, तो व्यक्तिगत कारकों को ध्यान में अवश्य रखा जाना चाहिए। कारण मात्रा में परिवर्तन से नातेदारी संबंध में परिवर्तन होता है। इस तरह, नातेदारी संबंधों को प्रकृति और संस्कृति के क्रम में समझा जा सकता है।

सपिंड के आधार पर विशुद्ध का अमूर्तिकरण कर, श्नाईडर राष्ट्रीयता और धर्म का भी जिक्र करते हैं। नातेदारी की तरह, ये दोनों भी प्रकृति–क्रम और संस्कृति–क्रम दृ इन दो घटकों से बने होते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोटः अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) पारंपरिक नातेदारी अध्ययन की श्नाईडर द्वारा की गई आलोचना के बारे में संक्षेप में बताएँ। केवल तीन वाक्यों में उत्तर दें।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

2) श्नाईडर सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली के बीच क्या भिन्नता बतलाते हैं? उदाहरण सहित व्याख्या करें।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

5.3 सांस्कृतिक दृष्टिकोण की महत्ता

श्नाईडर के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से नातेदारी–अध्ययन ने ऐसे मानववैज्ञानिक अध्ययनों का पुनरुत्थान किया जो संस्कृति पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इन अध्ययनों को 'नया नातेदारी अध्ययन' कहा गया है, कारण ये ऐसे संबंधों की पड़ताल करते हैं जो जैविक नहीं होते। इनका फोकस समय के साथ देखभाल करने वाले से पनपने वाली नातेदारी प्रणाली और इसके लिए सकारात्मक 'चयन' प्रतिक्रिया पर रहता है (वेस्टन 2013)। इन अध्ययनों ने पश्चिम में नातेदारी के नए और उभरते रूपों पर प्रकाश डाला है। इन्होंने जिन कुछ मुद्दों को सामने लाया है वे हैं – विषमलैंगिक विवाह की अस्थिरता और तलाक, समलैंगिक विवाह का प्रचलन, लैंगिक समानता, समलैंगिकों के अधिकार, गिरती प्रजनन दर, अकेले रहने वालों की बढ़ती संख्या आदि।

5.3.1 जेनेट कार्स्टन – संबद्धता की संस्कृति

डेविड श्नाईडर द्वारा नातेदारी की आलोचना के बाद 'संबद्धता' और साझेदारी जैसे शब्द, नातेदारी–अध्ययन में लोकप्रिय हो गए। इसने रक्त–संबंधों और गठबंधन के आधार पर नातेदारी की अधिक औपचारिक या सीमित परिभाषाओं से, संबद्धता–आधारित अनौपचारिक संबंधों की ओर शिफ्ट या बदलाव प्रदर्शित किया है। जोर समाज में रोजमर्रा की पारस्परिकता की बारीकियों को पकड़ने पर है।

गतिविधि 1

समकालीन शहरों में रहना हमें रक्त और वैवाहिक संबंधों के बाहर, लोगों से जुडने के अनेकों अवसर प्रदान करता है। कुछ ऐसे अवसरों/परिस्थियों के बारे में बताएँ जब संबद्धता की संभावना बन सकती है।

इस दृष्टिकोण के मुताबिक 'संबद्धता' के अंतर्गत प्रजनन, विवाह, गोद लेने और अन्य तरीकों से बनाए गए संबंध सभी आ जाते हैं। मानवविज्ञानी जेनेट कार्स्टन ने इस शब्द का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया। उन्होंने जैविक और सामाजिक के बीच पूर्व–निर्मित विश्लेषणात्मक ध्रुवीयता से बाहर निकलने लिए 'संबद्धता' का प्रयोग किया। कार्स्टन के मुताबिक संबद्धता का वर्णन करने या उसे व्यक्त करने के लिए समाज–विशेष में प्रचलित पदों और व्यवहारों का उपयोग करना चाहिए, जिनमें से कुछ मानवविज्ञानियों द्वारा पारंपरिक तौर पर पर समझे जाने वाले नातेदारी के दायरे से बाहर स्थित होते हैं। मलेशिया के लैंगकॉवी द्वीप–समूह में संबद्धता संबंधी विचारों से पता चलता है कि 'सामाजिक' को 'जैविक' और जैविक को 'प्रजनन' से बीच अलगाव किस हद तह संस्कृति–सापेक्ष होता है। लैंगकॉवी में संबद्धता, प्रजनन तथा एक साथ रहने और खाने दोनों से बनता है। उनके बीच प्रयोग में लाई जाने वाली शब्दावली के लिहाज से, इनमें से कुछ को सामाजिक और अन्यों को जैविक कहना कोई मायने नहीं रखता है। (कार्स्टन 1995, 236))। संबद्धता की अवधारणा नातेदारी को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित करती है, जिसके जरिए संबंध लगातार बनाए, अनुभव और नियोजित या व्यवस्थित किए जाते हैं।

5.3.2 मर्लिन स्ट्रैथरन

मर्लिन स्ट्रैथरन ने तकनीकी हस्तक्षेपों द्वारा जैविक की धारणा पर सवाल उठाते हुए, नातेदारी के जैविक और सांस्कृतिक के निहायत ही दो अलग–अलग श्रेणियों पर सवाल उठाया। श्नाईडर से प्रेरित होते हुए स्ट्रैथरन सुझाव देती हैं कि नातेदारी न केवल 'प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित सामाजिक निर्मिति' है, बल्कि खुद प्रकृति से जैविक का बोध होने लगा है। उनका तर्क है कि जैविक यानि आनुवंशिक संबंध को स्वाभाविक तौर पर नातेदारी मान लिया गया। अपनी किताब *किनशिप इन ग्रेट ब्रिटेन में स्ट्रैथरन* (1992) ने तकनीकीगत बदलाव के कारण जैविक की धारणा में आए बदलावों पर रोशनी डाली है। प्रकृति और संस्कृति के बीच के द्विभाजन या ध्रुवीयता को खारिज करते हुए, उन्होंने दलील दी कि जैविक पहलू अब नातेदारी चिन्हित करने का निर्विवाद आधार नहीं रह गया। चूँकि नई प्रजनन तकनीकी, जैविक नातेदारी की निर्मिति में मानवीय हस्तक्षेप को दृश्यमान बनाती हैं, इसलिए

उनसे प्राकृतिक और जैविक ज्यादा स्पष्टता के साथ सामने आए हैं। ऐसे में, उन्हें प्रदत्त मानकर चलना अब संभव नहीं रह गया। अब यह जरूरी हो गया कि जैविक के तार, सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं से हुए जुड़े हुए हैं, इस मान्यता के आधार पर चर्चा और पड़ताल होनी चाहिए (स्ट्रैथरन, 1992).

5.3.3 कैथ वेस्टन – चुना गया का परिवार

'चुना गया परिवार' शब्द का प्रयोग समलैंगिकों के परिवारों के लिए किया जाता है, जो अस्वीकृति और हिंसा के कारण अपने जैविक परिवार से बाहर निकलने का विकल्प चुनते हैं। यह परिवार जन्म–परिवार के ठीक उल्टा होता है। कैथ वेस्टन ने सैन फ्रांसिस्को में रहने वाले समलैंगिकों के परिवारों का अध्ययन किया जिनमें नातेदारी की धारणा प्रतीकात्मकता, प्रेम और दोस्ती के आधार पर मौजूद थी। उन्होंने परिवार की उस समझ की आलोचना की, जो केवल पुरुष और महिला के बीच यौन संबंध के माध्यम से बनता है। समलैंगिकों के बीच परिवार का उनका अध्ययन अपनी मर्जी से चयन के माध्यम से नातेदारी बनाने का एक उदाहरण पेश करता है। वह हमें जैविक नातेदारी के प्राकृतिक लक्षणों को प्रदत्त मानकर न चलने का सुझाव देते हुए कहती हैं कि 'चयन' के आधार पर जैविक बंधनों से परे परिवार का गठन संभव है। वेस्टन ने नातेदारी की बुनियाद में रक्त संबंधों की जगह सहमति आधारित संबद्धता को रखा। कारण इस तरह की समलैंगिक नातेदारी में संबंध, दोस्ती और प्रेम के आधार पर बनते हैं न न कि जैविक या वैवाहिक के आधार पर। सांस्कृतिक तौर पर ऐसे परिवारों की पहचान, केवल रहने की व्यवस्था में नहीं बल्कि जिस तरह की इच्छा या कामना को ये पुनरुत्पादित करते हैं, उसमें भी निहित होती है। इस तरह की कामना, साथ रह रहे युगल को संतान पैदा करने की ओर उन्मुख करता है, और इस लिहाज से यह दांपत्य, अन्य दांपत्यों के समान ही होता है। भेद युगल बनाने के तरीके या किस्म में होता है। समलैंगिक युगल, प्रजनन संबंधी नातेदारी की परिभाषा से जैव–आनुवांशिक पहचान को विस्थापित करना चाहते हैं। यह परिवार और नातेदारी की सांस्कृतिक समझ का एक और उदाहरण है, जहाँ रिश्ते प्रदत्त नहीं होते बल्कि रोजमर्रा की स्थितियों में बनाए और बरकरार रखे जाते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोटरू अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1). 'सांस्कृतिक संबद्धता' की अवधारणा के बारे में बताएँ।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

2). जैविक परिवार और चुने गए परिवार के बीच दो अंतर बताएँ।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

5.4. नए नातेदारी अध्ययन

सांस्कृतिक दृष्टिकोण नातेदारी को एक प्रतीकात्मक प्रणाली के रूप में परिभाषित करता है, जिसकी पैठ अन्य वैचारिक क्षेत्रों (जैसे धर्म) में भी है। इस तरह के

दृष्टिकोण का परवर्ती अध्ययनों पर गहरा प्रभाव पड़ा। पश्चिमी और गैर–पश्चिमी समाजों में नातेदारी के बाद के अध्ययनों में जब एथनिसिटी, व्यक्तिगत अनुभव और अन्य खासियतों समेत सांस्कृतिक कारकों को संज्ञान में लेते हुए गहन वर्णन किया गया, तब नातेदारी की समझ में आई भिन्नता नजर में आने लगी। सांस्कृतिक

दृष्टिकोण का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उसने नातेदारी को महज जैविक तक सीमित नहीं रहने दिया। उसने नातेदारी के तहत उन संबंधों को भी लाया जो रक्त या विवाह संबंधों के दायरे से बाहर थे।

5.4.1. जैविक से परे

श्नाईडर के सांस्कृतिक दृष्टिकोण का कई उन मानवविज्ञानियों ने स्वागत किया, जो नातेदारी को जैविक बंधनों से मुक्त करना चाहते थे। समलैंगिकों ने इस धारणा का समर्थन किया कि गैर–पारंपरिक परिवारों के बनाने और उनमें रोजमर्रा के जीवन संचालन के लिए जैविक पहलू कोई मानक निर्धारित नहीं करता है। सांस्कृतिक

दृष्टिकोण ने विषमलैंगिक और एकल यौन–संबंधों को सम्मिलित कर, परिवार और विवाह की समझ को विस्तार दिया। जैविक के इतर आधार पर बने संबंधों के बड़े फलक को समझने में 'काल्पनिक' नातेदारी की अवधारणा प्रासंगिक हो गई। अब विद्वान और सामजविज्ञानी इस बात को लेकर ज्यादा जागरूक हैं कि नातेदारी केवल शारीरिक संबंधों का प्रतिबिम्ब नहीं है बल्कि इसकी विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों में सामाजिक रूप से निर्मिति होती है। इस तरह की जागरूकता का एक परिणाम वंशावली संबंधों से परे जाने की कोशिशों और संबद्धता जैसे कहीं अधिक उपयुक्त शब्दों के प्रयोग के रूप में देखने को मिला।

5.4.2. नारीवादी योगदान

नारीवादियों द्वारा इसका सबसे अधिक उपयोग किया गया। उन्होंने लैंगिकता की विरचना या पुनर्पाठ के लिए इस दृष्टिकोण का उपयोग किया। नारीवादियों ने लैंगिकता को सांस्कृतिक निर्मिति बताते हुए कहा कि इसका अर्थ समाज–दर–समाज भिन्न अर्थात समाज–सापेक्ष होता है। उन्होंने लैंगिकता को विश्लेषण के केंद्र में रखा तथा वंश और गठबंधन की बजाय सत्ता संबंधों की गतिकी (डायनामिक्स) पर जोर दिया। इस तरह, नातेदारी और वंश–संबंध को अधिकारों और कर्तव्यों के पदों में नहीं बल्कि सत्ता और उसे हासिल करने की रणनीतियों के पदों में निर्मित किया गया। पितृवंशीय व्यवस्था पर कोलियर के अध्ययन ने इस बात पर रोशनी डाली कि पितृस्थानिक आवासों में महिलाएं अपने पति और पुत्रों के माध्यम से अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए कैसी रणनीतियाँ अपनाती हैं।

जेन कोलियर और सिल्विया यानागिसाको ने यह दलील दी कि नातेदारी और लैंगिकता के अध्ययन को प्रजनन/पुनरुत्पादन के जैविक तथ्यों के संदर्भ में नहीं रखा जाना चाहिए क्योंकि वे खुद सांस्कृतिक निर्मिति होते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न संस्कृतियों में पुरुष और महिला, स्त्रीत्व और पुरुषत्व की अलग–अलग धारणाएँ होती हैं। नातेदारी–अध्ययन में नारीवादी योगदान ने एक नई दिशा दी। उसमें महिलाओं को एजेंट (सक्रिय कर्ता) के रूप में देखने पर जोर दिया गया, न कि महज देह के रूप में, जिन पर पुरुषों का अधिकार है और जो परिजनों को एक समूह में साथ बांधने का काम करती हैं। नब्बे के दशक तक ऐसे अनेकों अध्ययन सामने आए जिन्होंने परिजन, खासकर माता और मातृत्व के अर्थ में आए बदलावों को दर्ज किया। रागोन ने अपनी किताब सरोगेट मदरहुडरू कॉन्सेप्शन इन द हार्ट (1994) में जैविक माता (सरोगेट) और दत्तक माता (सरोगेट को किराए पर लेने वाली महिला) के बीच भेद किया। उनके मुताबिक गोद लेने वाली माता वह है जो बच्चे को अपने हृदय में धारण करती हैं न कि गर्भ (देह) में। वह बताती हैं कि दोनों माताएँ खरीदारी और अनुष्ठानों में गर्भावस्था के अनुभवों को कैसे साझा करती हैं और इस तरह, मातृत्व को नया अर्थ मिलता है। मातृत्व को केवल जैविक संबंधों पर नहीं, बल्कि देखभाल पर आधारित माना जाता है।

5.4.3. प्रजनन की नई तकनीकी (NRTs)

एनआरटी (प्रजनन की नई तकनीकी) का आशय दुनिया भर में प्रजनन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली नई तकनीकों, जिनमें जीन ट्रांसफर, इन वाइट्रो फर्टिलाइजेशन, भ्रूण ट्रांसफर, गैमेटे इंट्रा–फैलोपियन ट्रांसफर, सरोगेसी, स्पर्म बैंक, फ्रोजन भ्रूण आदि शामिल हैं, से है। ये तकनीकी सेक्स या यौन–क्रिया को प्रजनन से अलग करना आसान बनाती हैं। इनका इस्तेमाल कर कोई महिला चाहे तो बिना सेक्स किए गर्भ धारण कर सकती है। ये महिला के संपर्क में आए बिना पुरुष को उसकी संतान का आनुवांशिक पिता बनने को मुमकिन करती हैं। एनआरटी नातेदारी की पूर्व प्रचलित सांस्कृतिक निर्मिति को चुनौती देती हैं और नई तरह के सामाजिक संबंधों को वजूद में लाकर, नातेदारी संबंधों को पुनर्परिभाषित करती हैं। ये लोगों को संबद्धता, पहचान और सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों की अपनी समझ को स्पष्ट करने में सक्षम बनाती हैं। मर्लिन स्ट्रैथरन के अनुसार, एनआरटी ने नातेदारी को समझने के तरीकों में एक नया आयाम जोड़ा है। जिसे कभी स्वाभाविक माना जाता था, वह अब चयन या इच्छा का विषय बन गया है। इस प्रकार, तकनीकी ने नातेदारी का वि–प्राकृतिकीकरण किया है। इसने लोगों को पुनरुत्पादन और संबंध बनाने के लिए चयन या इच्छा का अवसर देकर उन्हें सक्षम बनाया है। इसने नातेदारी नेटवर्क में नए तरह के लोगों, जैसे कि शुक्राणु या अंडाणु दाता, को सम्मिलित होने की संभावना उत्पन्न की है। इस प्रकार, तकनीकी नातेदारी को नए मायने देती है जो जैविक से परे हैं और नातेदारी के नेटवर्क को भी फैलाती है।

सुसान मार्था ने अपनी किताब *एग्स एंड वोंब्स: द ओरिजिंस ऑफ ज्यूईशनेस* में दिखाती हैं कि प्रजनन की तकनीकी, यहूदी व्यक्तिपन को लैंगिकता और सेक्स भूमिकाओं के जरिए कैसे रचती हैं। आईवीएफ (इन वाइट्रो फर्टिलाइजेशन) के एथनोग्राफीय अध्ययन के माध्यम से वह बताती है कि कैसे यहूदी महिलाएं राज्य–स्वीकृत प्रजनन तकनीकी का उपयोग करके प्रजनन में अपनी एजेंसी का प्रयोग करती हैं। उनके शोध से पता चलता है कि कैसे एकल, निःसंतान इजरायली महिलाएं भी अपने प्रजनन के भविष्य पर नियंत्रण कर सकती हैं। इस प्रकार,

नातेदारी जैविक और वैवाहिक तक ही सीमित नहीं है। मातृत्व और नातेदारी दोनों सांस्कृतिक निर्मितियाँ हैं, जिनमें महिलाएं महज आदेश पालन करने वाली भूमिका में नहीं होती हैं, बल्कि सहायक प्रजनन तकनीकी की प्रक्रिया में संलग्न होने के नाते वे सक्रिय नियंत्रक की भूमिका में होती हैं। इससे उन्हें यहूदी नातेदारी की एक नई श्रेणी विकसित करने में मदद मिलती है जो विवाह की धार्मिक और सामाजिक संस्था से अलग होते है।

बोध प्रश्न 3

नोटः अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) नए नातेदारी अध्ययन को परिभाषित करें।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

2) नातेदारी अध्ययन को पुनर्जीवित करने में नारीवादी मानवविज्ञानियों के योगदान की चर्चा करें।

_____
_____
_____
_____
_____

5.5 श्नाईडर के बाद नातेदारी अध्ययन

डेविड श्नाईडर द्वारा प्रतिपादित सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने संबद्धता के व्यापक स्पेक्ट्रम को नातेदारी–संबंधों की समझ के दायरे में लाकर उन पर नई रोशनी डाली। जैविक नातेदारी की सार्वभौम धारणा को पूर्ण रूप से पीछे छोड़ दिया गया। नीधम के अनुसार, यह प्रक्रिया की व्याख्या है जिससे नातेदारी की निर्मिति होती है न कि अपने–आप में प्रक्रिया। इसलिए व्याख्या और प्रतीकात्मक अर्थ अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। इस प्रकार, एक विश्लेषणात्मक श्रेणी के रूप में नातेदारी की जगह श्संबद्धताश और श्साझा तत्वश की धारणाओं को लाया गया। इसके अलावा, श्नाईडर ने नातेदारी की मानववैज्ञानिक समझ में विद्यमान पश्चिमी पूर्वाग्रह को उजागर किया और सांस्कृतिक दृष्टिकोण की मूल्यवत्ता को उजागर किया, जो कि अध्ययन किए जा रहे समुदाय या समाज का अपना (इनसाइडर) दृष्टिकोण होता है। हालाँकि, श्नाईडर के बाद उभरी नातेदारी की दृष्टि काफी समरूप थी। नातेदारी को वर्ग, लैंगिकता आयु या जातीयता आधारित भेद के बिना समझा जाता था। आलोचकों (बाद के वर्षों में खुद श्नाईडर भी) ने इस बात पर जोर दिया कि संस्कृति की एक समरूप और सुनिश्चित लक्षण के विपरीत, व्यक्तिगत तौर पर प्रतिभागियों ने वास्तव में अमेरिकी समाज में अपनी विशेष स्थिति के साथ–साथ अपने खुद के जीवन–इतिहास के आधार पर नातेदारी के विभिन्न रूपों और इसके अर्थों को व्यक्त किया होगा। इसलिए, नातेदारी के अध्ययन में सांस्कृतिक सापेक्षवाद का मजबूत असर था।

5.6 सारांश

इस इकाई में हमने मानवविज्ञानी डेविड श्नाईडर द्वारा प्रतिपादित नातेदारी अध्ययन के सांस्कृतिक दृष्टिकोण के बारे में सीखा। यह दृष्टिकोण प्रजनन और उसकी प्रक्रिया को दिए गए प्रतीकात्मक अर्थ पर जोर देता है। श्नाईडर के अनुसार, पश्चिमी मानवविज्ञानियों की नातेदारी की समझ समस्याप्रद थी, कारण यह उनकी

इस पूर्वमान्यता पर आधारित थी कि जैविकता सार्वभौमिक है और हर कोई रक्त और विवाह के माध्यम से जुड़े होने के समान नियम का पालन करता है। अमेरिकी नातेदारी के अपने अध्ययन में उन्होंने दिखाया कि नातेदारी की समझ कैसे इस बात पर निर्भर करती है कि लोग इसकी व्याख्या किस तरह करते हैं। अन्य मानवविज्ञानियों ने संबद्धता और साझे तत्व की प्रक्रिया पर जोर देने के लिए उनके दृष्टिकोण को अपनाया। यह दृष्टिकोण जैविकता से परे नातेदारी को समझने के लिए प्रासंगिक हो गया। साथ ही, विवाह और परिवार की संस्था की प्रदत्त परिभाषा पर भी सवाल उठे। समलैंगिकों द्वारा बनाए गए परिवारों को समझने के लिए

सांस्कृतिक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया, जो कि साझेदारी और दोस्ती पर आधारित थे। इसने नई प्रजनन तकनीकी द्वारा निभाई गई भूमिका पर प्रकाश डालते हुए माता बनने और मातृत्व के मायने को पुनर्परिभाषित किया और नातेदारी के दायरे को विस्तार दिया। नारीवादी मानवविज्ञानियों ने लैंगिक संबंधों की रचना में घर–परिवार में चलने वाली सत्ता की गतिकी और रणनीतियों की व्याख्या के लिए सांस्कृतिक दृष्टिकोण का उपयोग किया।

5.7 संदर्भ

1. कार्स्टन, जेनेट, 1995, 'द सब्सटेंस ऑफ किनशिप एंड द हीट ऑफ द हार्ट: फीडिंग, पर्सनहुड, एंड रिलेटेडनेस अमंग मलय इन पुलाऊ लैंगकॉवी' *अमेरिकन एथनोलॉजिस्ट,* 22 (2)रू 223–24

2. श्नाईडर डी. एम. (1980), *अमेरिकी किनशिप: ए कल्चरल एकाउंट*, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस,

3. ———————— (2004 संस्करण), 'व्हाट इज किनशिप ऑल अबाउट', आर पार्किन और एल. स्टोन (सं.), *किनशिप एंड फैमिली: एन एंथ्रोपोलॉजिकल रीडर*, यू. एस.ए., ब्लैकवेल, पृ. 362–77

4. कान, सुसान मार्था, 2004, 'एग्स एंड वॉम्ब्स : द ओरिजिन्स ऑफ ज्यूइशनेस', आर. पार्किन और एल. स्टोन (सं.), *किनशिप एंड फैमिलीः एन एंथ्रोपोलॉजिकल रीडर*, यू.एस.ए., ब्लैकवेल, पृ. 362–77

5. वेस्टन कैथ (2013), *फैमिलीज वी चूजः लेसबियंस, गेस, किनशिप*, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. श्नाईडर ने निम्नलिलिखित आधार पर पारंपरिक नातेदारी अध्ययन की आलोचना कीः–

अ) पारंपरिक सिद्धांत जैविक पहलू के एकतरफा महत्व पर आधारित होने के कारण अपनी उपयोगिता में सीमित थे। गैर–पश्चिमी समाज के परिवार और नातेदारी को समझने में वे उपयुक्त नहीं हो सकते थे।

आ) उनका सरोकार केवल जैव–आनुवांशिक (बायोजेनेटिक) तत्वों की साझेदारी से था। वे साझेदारी की मात्रा या हद का अध्ययन नहीं कर रहे थे।

इ) वे संरचना और संस्कृति में कोई भेद नहीं कर रहे थे।

2. उन्होंने सांस्कृतिक प्रणाली को ऐसी इकाइयों (भागों) से बनी हुई प्रणाली माना, जो खास तरह से परिभाषित किए जाते हैं और जिनके बीच, विभिन्न विचारों के आधार पर भिन्नता होती है। मानक प्रणाली नियम–कायदों से बनी होती है। समाज और समुदाय में स्वीकृति पाने के लिए लोगों से उनके पालन करने की अपेक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए, धर्म–संस्था मानक प्रणाली है जबकि पूजा के लिए मंदिर जाना सांस्कृतिक ।

बोध प्रश्न 2

संबद्धता की संस्कृति का प्रयोग जैनेट कार्स्टन ने नातेदारी के उन संबंधों के लिए किया जो जैविक और वैवाहिक संबंधों के दायरे से बाहर बनते हैं। इसमें एक–दूसरे से जुड़े होने के आधार पर संबंध बनते हैं। उदाहरण के लिए, एक कमरे में रह रहे दो मित्रों के बीच की संबद्धता।

1. जैविक परिवार और चुने गए परिवार में दो अंतर निम्नलिखित हैंः–

अ) जैविक परिवार प्रजनन आधारित होता है जबकि चुना गया परिवार मित्रता आधारित।

आ) जैविक परिवार की सदस्यता जन्म के आधार पर मिल जाता है जबकि चुने गए परिवार का सदस्य बड़े होने पर अपनी मर्जी से बना जाता है।

बोध प्रश्न 3

1) नए नातेदारी अध्ययन से वंश और गठबंधन दृष्टिकोण से सांस्कृतिक विश्लेषण की ओर उन्मुख होने का बोध होता है। इसमें रक्त, आनुवंशिकी और विवाह से परे, व्यापक या वृहत्तर फ्रेमवर्क के तहत नातेदारी को समझने पर फोकस रहता है। प्रजनन की नई तकनीकी, समलैंगिक परिवारों और अन्य सम्बद्ध प्रक्रियाओं ने नातेदारी की समझ में नए आयाम जोड़े हैं।

2) नारीवादी मानवविज्ञानियों ने लैंगिकता को सांस्कृतिक निर्मिति बताते हुए कहा कि इसका अर्थ समाज–दर–समाज भिन्न अर्थात समाज–सापेक्ष होता है। उन्होंने लैंगिकता को विश्लेषण के केंद्र में रखा तथा वंश और गठबंधन की बजाय सत्ता संबंधों की गतिकी (डायनामिक्स) पर जोर दिया। इस तरह, नातेदारी और वंश–संबंध को अधिकारों और कर्तव्यों के पदों में नहीं बल्कि सत्ता और उसे हासिल करने की रणनीतियों के पदों में निर्मित किया गया।